पद्य -भाग

काञ्चीनाथ झा 'किरण'

जन्म	-	28 दिसम्बर 1906 ई0
जन्म स्थान	-	धर्मपुर (दरभंगा)
वृत्ति	-	लक्ष्मीश्वर उच्च विद्यालय सरिसबमे शिक्षकक पद पर कार्यरत। बादमे ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे मैथिलीक प्राध्यापक।
कृति	-	चन्द्रग्रहण (उपन्यास), विजेता विद्यापति (नाटक), ध्रुव, अभिमन्यु (बालोपयोगी) जय जन्मभूमि (एकांकी), पराशर (महाकाव्य)
		किरण जी विशिष्ट साहित्य सेवी छलाह आ मैथिलीक लेल कयल गेल आन्दोलनमे अग्रगण्य रहलाह।
पुरस्कार	-	1989 ई0 मे 'पराशर' (महाकाव्य पर साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ पुरस्कृत भेलाह।
निधन	-	5 मार्च 1989 ई0 ।

युवकसँ

हो पैघ काज केहनो उत्साहकँ न हारी,
औचित्य बुझि पड़ै जँ राखी प्रवास जारी।
आरम्भ कार्य कै कऽ मुख नै कदापि मोड़ी,
पथमे पड़ल रहौ किछु कोमल कली कि रोड़ी।
अपना बुतेँ हुए जँ नहि आनकँ अढ़ाबी,
कर्त्तव्यनिष्ठ भै कऽ पुनि आनकँ पढ़ाबी।
थिक धर्म सब युवककेर देश जाति सेवा,
होएत प्रथम कठिनता, परिणाम किन्तु मेवा।
विश्वास निज श्रमक दृढ़ जाधरि रहत हृदयमे,
दासी बनलि सफलता रहतीह पैर धयने।
यावत् रुधिर गरम अछि चलु ता सुकाज कयने,
पुनि कै सकब 'किरण' की जर्जर शरीर भएने।

□□□

शब्दार्थ

औचित्य=उचित

पथ=मार्ग, रास्ता

मेवा=मधु, फल

दृढ़=स्थिर, अचल

रुधिर=शोणित (खून)

प्रश्न ओ अभ्यास

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि पैघ काजमे कथीकेँ नहि हारबाक बात कहलनि अछि?
2. उचित काजमे कथीकेँ जारी रखबाक चाही?
3. जँ अपना बुतेँ कार्य संभव हो तऽ आन के की करबाक चाही?
4. अनका उपदेश कखन दी?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. युवकक की धर्म थिक?
2. सफलता कखन पयर धयने रहैत अछि?
3. शरीर जर्जर भेला पर की कार्य संभव थिक? किएक?

2. कोष्ठकमे देल गेल शब्दसँ रिक्त स्थानक पूर्ति करू-

1. कर्त्तव्यनिष्ठ भय कऽ पुनि आनेकेँ..................................(पढ़ावी/अढ़ावी)
2. होयत प्रथम कठिनता,..किन्तु मेवा-(सफलता/परिणाम)
3. विश्वास निज..........................दृढ़ जाधरि रहत हृदयमे-(श्रमक/भ्रमक)
4. पुनि कय सकब................................की जर्जर शरीर भएने-(किरण/सुमन)

3. कोनो व्यक्ति वस्तु, स्थान आदि संज्ञा कहवैछ। प्रस्तुत कवितामे सँ संज्ञा शब्द चुनू।

4. निम्नलिखित शब्दसँ वाक्य बनाउ-

पैघ	विश्वास
आरम्भ	श्रम
कर्त्तव्यनिष्ठ	सफलता

ईशनाथ झा

जन्म	-	1907 ई0
जन्म स्थान	-	नवटोल, मधुबनी
वृत्ति	-	चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय दरभंगामे मैथिली विभागक अध्यक्ष।
कृति	-	'माला'-कविता संग्रह, चीनीक लड्डू, उगना,'मौलिक नाटक', शकुन्तला, मृच्छकटिक,-अनूदित नाटक सुकंठ मंचीय कविक रूपमे 'सरसकवि' क उपाधि। प्रतिष्ठित लोकप्रिय शिक्षक।
निधन	-	1965 ई0

□□□

गङ्गाक विनती

सुरसरि, तुअ पावन तट परिहरि, जाइत अपन निवास।
बहइछ नीर, थीर मति गति नहि, मन अछि विकल उदास।।
तोहर विमल जल पीबि अमृतहुक, किछु नहि रहल पिआस।
रहितहुँ खढ़क कुटीमे भेटल, स्वर्गक सुख सविलास।।
शीतल पाँक अपन तन लेपल, मेटल पापक त्रास।
कतबओ स्नान कएल पुनि तइओ, रहल बनल अभिलास।।
एहन अतुल सुख कत पुनि भेटत, सोचइत होइ हतास।
बिसरब नहि मा! डोरि लगाएब, जे पुनि आबी पास।।
छमव दोष सभ हमर दया कए, तुअ चरणक हम दास।
'ईशनाथ' नहि दोसर शरण अछि, एक तोहर अछि आस।।

शब्दार्थ :-

सुरसरि=गंगा नदी
तुअ= तोहर (अहाँक)
पावन=पवित्र
परिहरि=छोड़िकेँ
निवास=घर
नीर= पानि, जल
थीर=स्थिर
मति=बुद्धि
विमल=उज्ज्वल, स्वच्छ
शीतल=ठंढा
अभिलास=इच्छा, कामना
अतुल=जकर तुलना नहि हो
छमव= क्षमा करब

प्रश्न ओ अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नक उचित विकल्पक चुनाव करू :-**
   (i) गंगाक तट केहन अछि?
   (क) मलिन (ख) पावन (ग) दूर (घ) लग
   (ii) गंगाजल पीलाक बाद कविकेँ कथीक पिआस नहि रहलन्हि?
   (क) नदीक पानि (ख) अमृत (ग) पोखरिक पानि (घ) दूध
2. **निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :-**
   (क) बहइछ नीर, थीर मति गति नहि..............................विकल उत्साह।
   (ख) शीतल...................अपन तन लेपल मेटल पापक त्रास।
3. **निम्नलिखित लघूत्तरीय प्रश्नक उत्तर लिखू :-**
   (i) कवि की छोड़िकेँ अपन घर जाइत छथि?
   (ii) गंगाक पावन-तट छोड़लासँ कविक मोन केहन भऽ गेलनि?
   (iii) खढ़क घरमे रहलो पर कविकेँ केहन सुख भेटैत छन्हि?

(iv) कवि अपन देहमे केहेन पांक लेपलनि?

(v) कवि किनका चरणक दास होमय चाहैत छथि?

(vi) एहि कविताक कविक नाम की छनि?

(vii) भक्त कविकँ एकमात्र किनका पर आशा छनि?

4. निम्नलिखित दीर्घोत्तरीय प्रश्नक उत्तर लिखू :-

(i) गंगा-स्नान कएलाक बाद कविकेँ केहन अनुभव भऽ रहल छनि?

(ii) कवि बेर-बेर गंगासँ की प्रार्थना कऽ रहल छथि?

(iii) गंगाक विनती शीर्षक कविताक भाव स्पष्ट करू।

(iv) गंगाक महिमाक उल्लेख करू।

5. भाषा-अध्ययन

(i) एहि पाठमे उल्लिखित विशेषण-पद बीछि कऽ लिखू :-

(ii) निम्नांकित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू :-

पावन, नीर, मति, उदास, विमल, स्वर्ग, अतुल।

(iii) निम्नांकित शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू :-

निंवास, विकल, कुटी, शीतल, स्नान, पिआस, दया।

(iv) निम्नांकित शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू :-

गंगा, घर, जल, आगि

6. योग्यता विस्तार :-

1. अहाँ अपना माँ-बाबूजीक सङ्ग जँ गंगास्नान गेल होई तँ अपन यात्राक अनुभव अभ्यास पुस्तिकामे लिखू।
2. गंगा तट पर अवस्थित प्रमुख शहरक नाम अपन अध्यापकसँ पूछिकँ ज्ञात करू।

7. निम्नांकित पद्यांशक सप्रसङ्ग, व्याख्या करू :-

तोहर विमल जल पीबि अमृतहुक किछु नहि रहल पिआस।

रहितहुँ खढ़क कुटीमे भेटल, स्वर्गक सुख सविलास।।

आरसी प्रसाद सिंह

जन्म	–	19 अगस्त 1911 ई0
जन्म स्थान	–	ग्राम-एरौत, समस्तीपुर
वृत्ति	–	आकाशवाणीक प्रोडयूसर (इलाहाबाद तथा लखनऊमे) पुनः प्राध्यापक (हिन्दी) खगड़िया कालेज। पुनः अहू पदकेँ छोड़ि स्वतंत्र रूपेँ काव्याराधनामे लीन रहलाह।
कृति	–	माटिक दीप (1958), पूजाक फूल (1967) तथा सूर्यमुखी (1981) तीनू मुक्तक काव्य-मौलिक काव्य संग्रह।
अनुवाद	–	'मेघदूत'
ललित निबंध	–	'हमर जीवन संगिनी'
		स्व0 रामलोचन शरण आ प्रो0 हरिमोहन झा पर लिखल हिनक संस्मरण उल्लेखनीय अछि।
सम्मान एवं पुरस्कार	–	1984 मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार (सूर्यमुखी काव्य संग्रह पर) विद्यापति पुरस्कार (1982) मैथिली अकादेमी पटना
निधन	–	15 नवम्बर 1996

शस्य-गान

स्वागत हे शरत-राजलक्ष्मीक सुफल-दान
आँगनमे हमर सुआपंखी गमकैत धान
रंग देखि हरियर चिर शीतल भऽ गेल आँखि
कल्पना-विहंगम केर चपल-सजग भेल पाँखि
कण्ठ खुजल भारतीक, मन पड़ल साम-गान
आँगनमे हमर सुआपंखी गमकैत धान
खेतहिसँ लाओल हम पाहुनकेँ अरिआइत
पूजा सत्कार करऽ वेआकुल अगुआइत
बाजि उठल शंख आई मंगल-ध्वनि शुभ विहान
स्वागत हे शरत-राजलक्ष्मी सुफल दान
गोबरसँ गायक हम नीपल आँगन-दुआरि
राखल हम अगितहिसँ घर, परिसर, पथ बुहारि
देवालय बनल गाय-महिषक बाड़ा-बथान।
आँगनमे हमर सुआपंखी गमकैत धान
रूप अन्नपूर्णाक सदानन्द सदा-बहार
लाल-लाल पालकी, हजार-पाँच सैय कहार।
नाचि उठल मनक मयूर, जुड़ा गेल प्राण
स्वागत हे शरत-राजलक्ष्मीक सुफल दान
आसन हम कोन दिउऽ? राखू हम कोन ठाम?
हलचलमे बिसरि गेलहुँ अपनो हम नाम गाम।
कंगना झनकैत चपल चूड़ी पर गेल कान
आँगनमे हमर सुआपंखी गमकैत धान

ठमुक ठमुक छथि खंजन चालि चलै चिरंजीव
खिड़कीसँ झाँकै छथि बहुआसिन उदग्रीव
टूटि गेल बाबा केर निर्गुण समाधि-ध्यान
स्वागत हे शरत-राजलक्ष्मीक सुफल दान
आबि गेल वर्षा धान काटिते कि हाँसु हाथ
मन पड़ल सोन-तरी, मन कवि रवीन्द्र नाथ
दृष्टिएँ कतेक दूर, भाव सृष्टिएँ समान
आँगनमे हमर सुआपंखी गमकैत धान

शब्दार्थ

शस्य = फसिल, जजाति

शरत् = शरद् ऋतु (छओ ऋतुमे चारिम), (आश्विन-कार्तिक एहि दू मासक समयमे)

सुआपंखी = सूगाक पाँखिक समान (हरियर)

चिर = दीर्घ काल, प्रचुर

कल्पना-बिहंगम = कल्पना रूपी पक्षी

चपल = चंचल

भारती = सरस्वती

साम-गान = सामवेदक गीत (सामवेद, दोसर वेदक नाम)

बिहान = भोर

अगितहि सँ = पहिने सँ

बथान = गाय-महिसिक रहबाक स्थान

अन्नपूर्णा = लक्ष्मी (पूर्ण अन्न देनिहारि)

कंगना = नारीक एक प्रसिद्ध गहना जे पहुँचामे पहिरल जाइत अछि

बहुआसिन = नव विवाहिता स्त्री, पुतोहु

निर्गुण = ओ गीत, जाहिमे ईश्वरक स्तुति निर्गुण मानि कएल गेल अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. निम्नलिखितसँ सही विकल्पक चयन करू :-

(i) हमरा देशमे कएटा ऋतु होइत अछि?

(क) चारि, (ख) दू, (ग) छओ, (घ) आठ

(ii) धान पकलाक बाद मिथिलामे सबसँ पहिने कोन पावनि होइत अछि?

(क) रवि-शनि (ख) नवान्न (ग) सामा-चकेवा (घ) सप्ता-डोरा

(iii) वेदक संख्या कतेक अछि?

(क) दू, (ख) तीन, (ग) चारि, (घ) छः

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :-

(i) रंग देखि हरियर चिर शीतल................................।

(ii) गोबरसँ गायक हम नीपल..।

(iii) नाचि उठल मनक मयूर.......................................।

स्वागत हे शरत...।।

3. लघूत्तरीय प्रश्न :-

(i) शस्यगान शीर्षक कविताक कविक नाम की छनि?

(ii) शरद् ऋतु कोन मासमे अबैत अछि?

(iii) नवान्न पावनि कोन महीनामे मनाओल जाइत अछि?

(iv) कवि कोन फसिलक स्वागत कऽ रहल छथि?

(v) अगहनमे हमरालोकनि खेतसँ कोन पाहुनकेँ अरिआइतकेँ अनै छी?

(vi) नवान्नमे घर दुआरि कथीसँ नीपल जाइत अछि?

(vii) बहुआसिन सभ खिड़कीसँ की झाँकि रहल अछि?

(ix) मिथिलाक मुख्य फसलक नाम लिखू।

दीर्घोत्तरीय प्रश्न

1. 'शस्य-गान' शीर्षक कविताक भाव स्पष्ट करू।
2. धान पकलाक बाद कृषक लोकनि गाम पर की सभ तैयारी करैत छथि?
3. नवान्न पावनि मिथिलामे कोना मनाओल जाइत अछि? वर्णन करू।
4. कविताक आधार पर अगहन मासक वर्णन करू?

भाषा अध्ययन

1. प्रस्तुत पाठमे विशेषण शब्दकेँ ताकिकेँ लिखू।
2. निम्नांकित शब्दक वाक्यमे प्रयोग करू :-

   आँगन, धान, पाँखि, पाहुन, बिहान
3. निम्नांकित शब्दक पर्यायवाची शब्द लिखू :-

   आँखि, पक्षी, पाहुन, फसिल, सरस्वती

गतिविधि

1. शिक्षकसँ छओ ऋतुक विषयमे जानकारी प्राप्त करू।

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

जन्म - 16 जुलाई 1917 ई0

जन्म स्थान - हरिपुर, बख्शी टोल, मधुबनी

वृत्ति - मुख्य अभियंता, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, पटना।

कृति - कुमार (1946), दू पत्र (1968)-दुनू उपन्यास, विडम्बना (1952) कथासंग्रह, संन्यासी (1948) खण्डकाव्य, पतन (1969) खण्डकाव्य, प्रतीक (1976) मुक्तक काव्य संग्रह, विदेश भ्रमण (1978)-यात्रा साहित्य, अक्षर परिचय (1984) बाल साहित्य।

अनुदित ग्रंथ-श्रीमद्भगवद्‌गीता तथा रूबाइयात ए ओमर खैयाम (पद्य) आ बाभनक बेटी तथा विप्रदास शरदचन्द्रक उपन्यास।

'दू पत्र' क हिन्दी अनुवाद- 'दो पत्र' क नामेँ साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित भेल।

पुरस्कार - दू पत्र नामक उपन्यास 1970 मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ पुरस्कृत।

सम्मान - चेतना समिति द्वारा ताम्रपत्र मिथिला विभूति सम्मान।

जय भारत

आइ ई शुभ विजय दिन,

तारीख पन्द्रह, शुक्र,

आओर एहि देशक नवल इतिहासमे विख्यात मास अगस्त,
भए रहल अछि दृढ़ ब्रिटिश-साम्राज्य गौरव अस्त।
छलहुँ हम सभ ग्रस्त,
आओर जे किछु देश छथि परतंत्र,
रटि रहल स्वाधीनता केर मन्त्र,
सभक मनमे भरल छन्हि उल्लास,
आब हुनका होइत छन्हि विश्वास
छथि देखैत भविष्यकेँ ओ पूर्ण आशा दृष्टि,
भए रहल अछि आइ अभिनव सृष्टि।
दासता केर पापसँ रंजित विकृत इतिहास-गत ओ पत्र
उनटि रहलै अछि, एखन प्रारम्भ
भए रहल अछि मुक्त-नव-अध्याय,
आइ होइछ मुक्त चालिस कोटि जन-समुदाय!
आइ अछि स्वाधीन।
आह! ओ परतन्त्रता-
दू शताब्दी पूर्व तोहर कठिन चाङुरने फँसल ई देश,
ई हमर प्रिय देश भारतवर्ष,
छल जगत विख्यात, की ऐश्वर्य, की उत्कर्ष।
किन्तु जहिआसँ कसल जंजीर,
क्रमहिँ पतनोन्मुख भेलहु हम-
कला-कौशल वृत्ति ओ व्यापार

नष्ट बौद्धिक, सांस्कृतिक आधार;
विविध नैतिक, राजनीतिक ह्रास,
प्रकृति-धारा रुद्ध, मृत उच्छ्वास।
अन्त तक बस बचल अति कृश गात्र
अस्ति पंजर मात्र।
किन्तु एहू कलेवरमे अमर छल ओ अंश
आत्म-जागृति, पूर्वजक स्मृति
दैत छल बल, प्रेरणा सभ भाँति,
सुप्त अवयवमे सतत छल चेतना-कण
ज्वलित - जीवन क्रांति,
शृंखलाकेँ तोड़ि फेकबा ले' सदैव अशान्ति।
छलहुँ झकझोरैत एकरा, शिथिल होइत गेल ई दुर्बन्ध,
सहल हम कत क्रूर अत्याचार,
पाशबिक अरु नीचतम व्यवहार।
बाल, अबला, वृद्ध-युवा सभहिक कहब की?
सड़ल कारागारमे, बलिदान शत शत प्राण
बढ़एबा ले' भू-जननि-अभिमान,
विश्व-भूषण अनेको वर रत्न
यत्नसँ पोषित, सुरक्षित, कएल हम उत्सर्ग,
देशकेँ स्वाधीन करबे टा हमर छल सर्ग
अहिंसा अरु शान्ति-पथ पर
बना कोनो तोप वा तरुआरि यंत्र
आत्म-बल अरु एकताक सुमंत्र
लए बढ़ल चललहुँ, अनेक प्रहार

शत्रु करइत छल, सहिअ हम, झुकाओल नहि माथ,
आओर अपने नहि उठाओल हाथ;
शत्रुओसँ छल ने हमरा द्वेष,
ई अहिंसा-युद्ध गान्धीजीक नव संदेश।
एहि अमोघ प्रयोगसँ अति प्रबल अरि पर जीत।
भेल अछि हमरा, बनाओल शत्रुकेँ हम मीत।
विकल युगमे-जखन सभ थल भए रहल संघर्ष
नित्य प्रति विध्वंसकारी अस्त्र
मानवक चिर सभ्यताकेँ कए रहल अछि ध्वस्त,
शान्तिमय शुभ हमर ई आदर्श-
देखाओल अछि मार्ग जगकेँ वृद्ध भारतवर्ष।
आई विजयक दिन हमर अछि ध्यान
कए रहल आकृष्ट उन्नत राष्ट्र केर सम्मान
तिरंगा सुन्दर पताका-त्याग, शुचि कृषि कर्म्म
शुद्ध गैरिक, श्वेत अरु हरिताभ करइछ द्योत,
नील रँजित चक्र शोभित मध्य शुभ परिवेश
धर्म्म-पथपर कर्म्म-रत रहबाक दैछ निदेश।
उत्सवक एहि समयमे
प्रार्थना हम करिअ हे भगवान!
देश-गौरव बढ़ए सभ दिन,
आओर गुंजित हो सतत
नीलाभ नभमे शान्ति वन्देमातरम् केर गान।।

शब्दार्थ

विख्यात = प्रसिद्ध

परतंत्र = दोसरक अधिकार मे

उल्लास = खुशी

रंजित = मिलल, रंगल

रुद्ध = रुकव, अवरोध

उच्छवास= जोर सँ साँस लेब

पाशविक=पशु सदृश

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. **निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू :-**

(i) कवि ककरा साम्राज्यक गौरवक अस्त कहलनि अछि?

(क) ब्रिटिश साम्राज्यवाद (ख) अमेरिका (ग) रूस (घ) यूरोप

(ii) भारतक स्वतंत्रताकेँ देखि आन परतंत्र देश कोन मंत्रक रट लगौने छथि?

(क) स्वाधीनताक (ख) भारतक (ग) ब्रिटिशक गौरवक (घ) उपर्युक्तमे सँ कोनो नहि

(iii) स्वतंत्रता दिवस कहिया मनाओल जाइछ?

(क) पन्द्रह अगस्त (ख) छब्बीस जनवरी (ग) दू अक्टूबर (घ) 14 अगस्त

(iv) ई कविता कोन अवसर पर रचल गेल छल?

(क) स्वतंत्रता दिवसक अवसर पर (ख) क्रांतिक अवसर पर (ग) गाँधीजीक जन्म दिवस (घ) उपर्युक्तमे सँ कोनो अवसर पर नहि।

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू-

(i) आओर एहि देशक नवल इतिहासमे विख्यात मास.......................।

(ii) दू शताब्दी पूर्व तोहर कठिन चाङुरमे फँसल............................।

(iii) सड़ल कारागारमे बलिदान शत शत..................................।

(iv) शत्रुओ सँ छल ने हमरा..................................।

ई अहिंसा-युद्ध गान्धीजीक.........................।

(v) नीलाभ नभ के शान्ति वन्देमातरम् केर.......................।

3. निम्नलिखित शब्दमे सँ शुद्ध शब्दमे (✔) सहीक आ अशुद्ध शब्दमे (X) गलतक चेन्ह लगाउ-

(क) विख्यात (ख) उलास (ग) स्वधीन (घ) ऐश्वर्ज (ङ) उतकर्ष (च) शिथिल (छ) उतसबक

4. लघू उत्तरीय प्रश्न

(i) स्वतंत्रता दिवस कहिआ मनोओल जाइछ?

(ii) स्वतंत्रताक पूर्व भारत कोन देशक अधिनस्थ छल?

(iii) स्वतंत्रताक प्राप्तिक लेल गांधीजी कोन पथ पर चललाह?

(iv) भारतकेँ स्वतंत्र भेला पर आन परतंत्र देश की कयलक?

(v) कवि देशक लेल भगवानसँ की प्रार्थना करैत छथि?

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(i) परतंत्रताक अवस्थामे भारतक की स्थिति छल?

(ii) स्वतंत्रता प्राप्तिक लेल देशक लोककेँ की करय पड़ल आ की सभ सहऽ पड़ल?

(iii) गाँधीजीक संदेश की छल?

(iv) भारतक तिरंगा झंडामे कोन-कोन रंग अछि? आ ओ कथीक प्रतीक अछि?

6. संज्ञा आ सर्वनामक विशेषता बतौनिहार शब्द विशेषण कहबैत अछि, पठित कवितासँ विशेषण शब्द चुनि कऽ लिखू।

गतिविधि

1. पाठक आधार पर स्वतंत्रता दिवस पर संक्षिप्त लेख लिखू

2. स्वतंत्राक लड़ाईमे भाग लेनिहार कोनो दू प्रमुख व्यक्तिक सम्बन्धमे लिखू

निर्देश

1. शिक्षकसँ अपेक्षा जे छात्र लोकनि के स्वतंत्रताक सम्बन्धमे विस्तृत जानकारी देथि।

महेन्द्र

जन्म तिथि – 06.011.1947

जन्म स्थान – सहरसा

वृत्ति– – मैथिलीक यशस्वी शिक्षक एवं विभागाध्यक्ष, सहरसा कॉलेज, सहरसा।

कृति – डॉ॰ शैलेन्द्र मोहन झा (बिनिबंध)

□□□

नव उत्थान

अप्पन शासन अप्पन गाम
अप्पन खेती नऽव विधान
नूतन उत्सव देवोत्थान
पंच शीर्ष पंचायत महान
स्तर तीन त्रिगुण संधान
जिला-प्रखण्डक गाम सिमान
अप्पन पंच अपन पंचायत
निर्णय सभटा एत्तहि हैत
अपन नियोजन अपन विधान
शिक्षा सुविधा छओ मतदान
चूनि लियऽ मुखिया-सरपंच
जे कऽ सकय ग्राम उत्थान
रीति-नीति सभ एही ठाम
ऋण सुविधा सहकारी नाम
अप्पन बजटक हो निर्माण
सुविधा प्राप्त बनय ई गाम
प्राप्त करत सभ वर्गक लोक
आरक्षण केर सुविधा भोग
करत स्त्रिगण नीतिक काज
विधि-विधान मर्यादा योग
महिमा मँडित लोकक गान
पेट भरल आ मुखमे-पान
सुखी रहऽ लए सक्रिय होउ
पंचायतमे थिक नव उत्थान

शब्दार्थ :

नऽव = नव, नवीन

विधान = नियम, कानून

देवोत्थान = देवताक निमित्त कर्त्तव्य यज्ञादिक

त्रिगुण = तीन टा गुण

सिमान = सीमा, चेन्ह

नियोजन = रोजगार

मतदान = भोट

सहकारी = कोनो विशेष उद्देश्यक हेतु ऐच्छिक संगठन

आरक्षण = सुरक्षित

उत्थान = उन्नति

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू :

(i) 'नव उत्थान' कविताक रचनाकार छथि।

(ii) डॉ. महेन्द्र (ख) यात्री जी (ग) गंगेश गुंजन (घ) तारानन्द 'वियोगी'।

(iii) त्रि स्तरीय पंचायती राज कोन स्तरकेँ कहल जाइत अछि :

(iv) ग्राम स्तरकेँ (ख) प्रखण्ड स्तरकेँ (ग) जिला स्तरकेँ (घ) तीनू स्तरकेँ

2. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(i) अपन नियोजन....................विधान।

(ii) रीति–नीति सभक..................ठाम।

(iii) महिमा..................लोकक गान।

(iv) पंचायते थिक................उत्थान।

3. **निम्नलिखित पाँतीमे सँ शुद्ध-अशुद्ध पाँतीकेँ चेन्ह लगाउ :**

(i) पंचायत स्तर पर ऋण सुविधा सहकारी संस्था द्वारा उपलब्ध कराओल जाइत अछि।

(ii) पंचायत स्तर पर महिलाक आरक्षण सुविधा नहि अछि।

(iii) बजटक निर्माण गाम स्तर पर होइत अछि।

लघूत्तरीय प्रश्न

(i) मुखिया-सरपंचक चुनाव किनका द्वारा कयल जाइत अछि?

(ii) विधि विधान आ नीतिक निर्धारण पंचायत स्तर पर किनका द्वारा कयल जाइत अछि?

(iii) गामक उत्थान किनका द्वारा होइत अछि?

दीर्घोत्तरीय प्रश्न

(i) 'नव उत्थान' कविताक भावार्थ लिखू।

(ii) त्रिस्तरीय पंचायती व्यवस्था पर निबन्ध लिखू।

(iii) पठित कविताक आधार पर गामक उत्थानक वर्णन करू।

(iv) पंचायत स्तर पर महिला आरक्षणक विवेचना करू।

गतिविधि

1. निम्नलिखित पद्यांशक सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) प्राप्त करत सभ वर्गक लोक
आरक्षण केर सुविधा भोग
करत स्त्रिगण नीतिक काज
विधि-विधान मर्यादा योग

(ii) रीति-नीति सभ एही ठाम
ऋण सुविधा सहकारी नाम
अप्पन बजटक हो निर्माण
सुविधा प्राप्त बनय ई गाम

2. **निम्नांकित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू :**

शासन, अपन, गाम, नूतन, सुविधा

निर्देश

(i) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्र गोष्ठीमे पंचायतक गतिविधिसँ छात्रलोकनिक संग चर्चा करथि।

(ii) छात्रक सहयोगसँ पंचायतक कार्यवाहीक कार्यशाला प्रदर्शन कराबथि।

(ii) शिक्षक छात्रकेँ गामक उत्थानक लेल पंचायत कोना आवश्यक होयत तकर जनतब कराबथि।

□□□

बुद्धिनाथ मिश्र

जन्म तिथि – मई 1949

जन्म स्थान – देवधा, जिला-समस्तीपुर

वृत्ति- – भारत सरकारक तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोगक मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) सँ सेवा निवृत्त।

कृति – मैथिली, हिन्दीक प्रसिद्ध गीतकार। मैथिली हिन्दीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित गीत, कविता एवं निबन्ध आदि। अखिल भारतीय स्तरक मंचीय कवि। नवगीतक पुरोधा।

□□□

जनी जाति

आब साम-कौनी
आ गम्हरी धान
नहि रहि गेली' हे।
ओ भ' गेली' हे
सतरिया चाउरक भात
जकर माँड़ो छै अनमोल।
जनी जाति छथि आब
गामक पंच-सरपंच
आ नगरक कमासुत नारि।
आब ओ पुरूखक
सोंगर पर टिकल
दुअम्मा गाछक डारि नहि,
स्वतन्त्र भोट बैंक छथि।
आब ओ बूढ़ बहिकिरनी नहि,
आँगनबाड़ीसँ ल' क'
सरकारी न'र ज'र धरि
धाँगि सकै छथि
अपन दैहिक बुत्ता पर।
आ घर घूरि क' बर्तन-वासन
भानस-भात, नजरि गुजरि
सेहो सभ करबे करतीह।

शब्दार्थ

जनी-जाति = स्त्री गण/महिला वर्ग।

साम-कौनी = साम आ कौनी एक प्रकारक अन्न।

गम्हरी धान = एक प्रकारक भदै धान जे पकलहुपर घोघहिमे रहैत अछि।

सतरिया चाउरि = एक प्रकारक नीक चाउर।

सोंगर = बाँसक खाम्ह जे भार उठयबाक लेल चार आदिमे लगाओल जाइत अछि। भार उठयबाक हेतु अतिरिक्त आधार स्तम्भ।

दुअम्मा = आमक दू फलक गुच्छा।

बहिकिरनी = नौकरानी, खबासिनी।

आँगनबाड़ी = आरम्भिक स्तरक शैक्षिक संस्था जतय '0' सँ '6' वर्षक आयु वर्गक नेना भुटकाक शिक्षा देबाक व्यवस्था होइत अछि।

न'र ज'र = सम्बन्धी, लगुआ भगुआ।

दैहिक = देहसँ सम्बन्धित

प्रश्न ओ अभ्यास

लघूत्तरीय प्रश्न

1. आब साम-कौनी आ गम्हरी धान के नहि रहि गेली अछि?
2. सतरिया भातक की अनमोल अछि?
3. आब जनी-जाति की भऽ गेलीह अछि?
4. आब नारी ककर सोंगर पर टिकल नहि अछि?
5. आब नारी केहन भोट-बैंक छथि?

वैकल्पिक प्रश्न

1. आब नारी भऽ गेली अछि/- साम-कौनी/सतरिया चाउरक भात
2. आब जनी-जाति पंच-सरपंच छथि/- गामक/नगरक
3. आँगनबाड़ी शिक्षण संस्था अछि/- उच्च शिक्षाक/आरम्भिक शिक्षाक

4. आब जनि-जाति धाँगि सकै छथि/- सरकारी नऽर जऽर/ घर दुआरि)

रिक्त स्थानक पूर्ति

1. ....चाउरक भात जकर ....छै अनमोल।
2. आब...................आ.................धान नहि रहि गेली।
3. आ घर........................बर्तन-बासन सेहो करबे करतीह।
4. आब ओ.................सोंगर पर ....दुअम्मा गाछक डारि नहि।

सही मिलान करू

1. सरकारी	(क) गाछ
2. दैहिक	(ख) नऽर-जऽर
3. दुअम्मा	(ग) कमासुत
4. नगरक	(घ) बुत्ता

लघूत्तरीय प्रश्न

1. सतरिया चाउरक की विशेषता अछि?
2. गम्हरी धानक की विशेषता अछि?
3. पहिलुक जनी-जातिकेँ साम-कौनी आ गम्हरी धान सँ तुलना किएक कयल गेल अछि?
4. आजुक जनी-जाति केँ सतरिया चाउरक भात किएक कहल गेल अछि?
5. आजुक जनी-जाति केँ कवि स्वतन्त्र भोट बैंक किएक कहलनि अछि?

दीर्घोत्तरीय प्रश्न

1. आजुक नारीक विशेषताक वर्णन करू।
2. पूर्वक नारी केहन होइत छलीह।
3. जनी जाति कविताक भावार्थ लिखू।

भाषा अध्ययन

1. नीचाँ लिखल शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू-

   स्वतन्त्र, सरकारी, बहिकिरनी, दैहिक
2. 'जनी-जाति' सन दू शब्दक एक संग प्रयोग होबऽवला शब्दकेँ शब्द युग्म कहल जाइत अछि। पाठमे प्रयुक्त शब्द युग्मकेँ चुनि कऽ लिखू।

अरूणाभ सौरभ

जन्म - 09 फरवरी, 1985

जन्म स्थान - चैनपुरा, सहरसा, बिहार

वृत्ति - भारत सरकारक केन्द्रीय विद्यालय संगठनक विद्यालयमे यशस्वी शिक्षक।

कृति - एतबे टा नहि (कविता संग्रह)

पुरस्कार - एतबे टा नहि (कविता संग्रह पर 2012 मे साहित्य अकादेमी दिल्ली द्वारा युवा पुरस्कार)

शहीद तिलकामाँझीक प्रति

ओ ओहिना ठाढ़ छथि
दिनराति टकटकी लगौने
निहारैत ओगरैत
सौंसे शहर कें
ठेहुन सँ ऊपर धोती
हाथ मे तीर-धनुष
ओ योद्धा
ओ कर्मवीर
कर्मयोगी
जवाँमर्द
गीत नाद मे
घुलल
सभ कंठ मे
उतरल
जर-जनानी, छौड़ा-मोनसाक

ओ ओहिना ठाढ़ छथि
जिनक धनुष सँ निकलल वाण
भागलपुरक अंगरेज डी.एम.
कें धरती चटा देलकनि
ओ.......ओ तिलका...............
तिलकामाँझि, तिल.. का.. माँ..झी..कें...

एही बड़क गाछ मे
फँसरी लगाओल गेलनि, हुनका
सभ जनैत छथि
जन–जन ई गप्प
मुदा नहि जनैत छथि
देशक इतिहासकार
हुनकर खिस्सा पिहानी
पसरल छै जन–जन मे

पोथी सँ मेटेलाक बादो
ओ ठाढ़े रहताह
सोझे अकाश देखैत रहताह
अप्पन मूर्तिक सोझे सोझ
रोज बनैत बिल्डिंग
बड़का पोस्टर
होर्डिंग बोर्ड
जै पर लोक कहै छै जे
''तिलकामाँझी आबे रोज छोटे
होय रहल' छौं''
मुदा तिलकामाँझी ठाढ़े रहताह
शहर सँ बाहर
विश्वविद्यालय
जतौका प्रशासनिक भवन

केर सोझे सोझ

एकदम छोट-बौन

हुनक पाथर मूर्ति

कनैत हैत

रुसैत हैत

सिसकैत हैत

सिहरैत हैत

रोजे-रोज

अकादमिक भ्रष्टाचार देखि

आ दिनानुदिन

छोटे भ' रहलाह

तिलका माँझी

बौन भ' रहलाह

जिनक शरीर आ पाथर मूर्ति

कखनहुँ काल

चिहुँकि उठै अछि

से किओ नहि देखलक

ओ मुरुत कहै छै

हमरा कान मे

''जाउ चलि जाउ

बिसरि जाउ

हम बीतल जमाना केर

हेरायल साँच छी

हम मिझायल आगिक

मेहायल आँच छी

लुप्त भ' गेल
सभ्यता केर लोक गान छी
जाहि संग जागल छल
जन-जन, नगाड़ा-माँदल-झाँझर पर
कहियो (संथाल विद्रोहमे)''
ओ ओहिना ठाढ़ छथि
अपन स्वत्व मे
भागलपुर नगर केर वर्तमान कें
ठिठुआ देखबैत
एकसरे
भविष्य मे हेरयबा सँ
निफिकिर
लोक कहैत अछि
तिलकामाँझी
मरियै ने सकै छथि कहियो
इतिहासक पोथी सँ
मेटेलाक बादो
अपन नायकत्व केर स्वत्व मे
ओ आदिवासीयत जकरा रोज
खेहारैक प्रयास अनवरत चलि रहल
संपूर्ण आदिवासीयत केर
गर्व केर संग
ओ प्रत्यंचा चढ़ौने
धनुष तानने
मुरेठा बान्हने

नजरि उठौने
होर्डिंग बोर्ड
बिल्डिंग, पोस्टर
स्ट्रीट लाईट
विश्वविद्यालय
सभक सोझे सोझ
ओ ओहिना ठाढ़ छथि
ओ.. ओ... तिलका
तिल.... का .. माँ...झी
तिलकामाँझी............
ओहिना ठाढ़ छथि
ओ भने ठाढ़ छथि.....।

प्रश्न ओ अभ्यास

निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू :-

1. शहीद तिलकामाँझीक लेखक छथि :-

   (क) ईशनाथ झा (ख) अरूणाभ सौरभ (ग) डॉ0 इन्द्रकान्त झा (घ) योगानन्द झा

2. अरूणाभ सौरभक रचना अछि :-

   (क) उत्थान (ख) शहीद तिलकमाँझीक प्रति (ग) पतन (घ) गामघर

3. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :-

   (क) ओ................ठाढ़ छथि।

   (ख) भागलपुरक अंगरेज डी.एम. कँ धरती ....देलनि।

   (ग) पोथी सँ मेटेलाक बाद................ठाढ़े................।

लघूत्तरीय प्रश्न

1. भागलपुरक अंगरेज डी.एम. कँ के धरती चटा देलनि?

2. योद्धा आ कर्मवीर के छलाह?

3. किनकर खिस्सा पिहानी पसरल छै जन-जन मे?

4. संथाल विद्रोहोमे के ओहिना ठाढ़ छथि?

5. तिलकामाँझी भारतके के छथि?

6. तिलकामाँझी किएक नामी भेलाह?

दीर्घोत्तरीय प्रश्न

(क) तिलका माँझीक विषयमे लिखू।

(ख) तिलका माँझीं पर लिखल कविताक भावार्थ लिखू।

(ग) शहीद तिलका माँझीक मूर्त्ति की अनुभव करैत अछि?

गतिविधि

(क) कोनो दोसर स्वतंत्रता सेनानीसँ परिचय करेबाक चेष्टा करू।

(ख) एहि पदमे सँ एक व्यक्तिवाचक संज्ञाक उदाहरण ताकू।